UnderStand UPSC
What we UnderStand, We Conquer

प्राचीन भारत और उसकी संस्कृति

ब्लू बुक

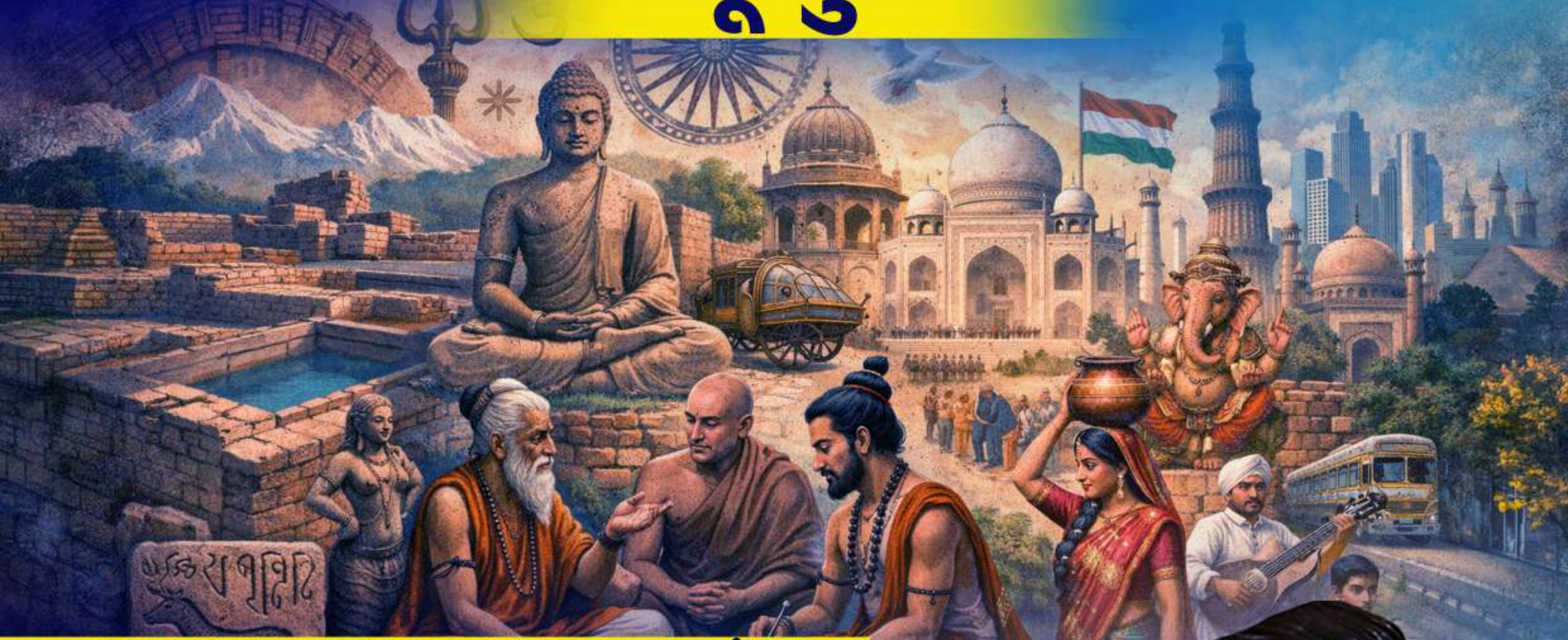

किताब की विशेषताएँ

- सभी स्टैंडर्ड सोर्स शामिल - "आपकी सोर्स की तलाश यहाँ पूरी होती है"
- सभी PYQs (पिछले वर्षों के प्रश्न) शामिल
- NCERT और एडवांस्ड सोर्स से चुने गए, सबसे काम के (हाई-यील्डिंग) कंटेंट
- स्मार्ट तुलनात्मक टेबल "तेज़ी से याद करने की ट्रेनिंग"
- विज़ुअल मेमोरी और तेज़ी से रिविज़न के लिए बोल्ड कीवर्ड्स और कलर कोड्स
- UPPSC/BPSC/MPSC और अन्य राज्य PSC परीक्षाओं के लिए भी उपयोगी।

SATYAM SIR
3 UPSC CSE Interview (Teacher / Founder)

Call For More Info
8377072252
2nd Floor, 32-B, Pusa Road, Block 11, Opp. Metro Pillar -122, Rajendra Nagar, New Delhi-110005
understand.upsc | UnderStandUPSC.com | : UnderStand UPSC

INDEX

प्रस्तावना....7
“क्षेत्रों का मानचित्रण और इतिहास की खोज: एक दोहरा अवलोकन".... 8
1. साहित्यिक स्रोत.... 8
वेद – प्राचीनतम भारतीय साहित्य....8
सूत्र ग्रंथ....9
पुराण....9
बौद्ध साहित्य.... 10
जैन साहित्य:....10
संगम साहित्य....11
प्रारंभिक भारत में जीवनी, काव्य और नाटक....11
2. विदेशी विवरण.... 11
3. पुरातत्व....12
सिक्के....12
शिलालेख....12
मानव इतिहास का आरंभ....14
प्रागैतिहासिक काल....14
पुरापाषाण युग....14
मध्यपाषाण संस्कृति....15
प्रारंभिक नवपाषाण संस्कृतियाँ और कृषि का आरंभ....16
बुर्जहोम [CSE 2021]....17
गुफकराल.... 17
ताम्रपाषाण चरण....20
ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ.... 20
गैरिक मृदभांड संस्कृति.... 22
लौह युगीन संस्कृति....22
चित्रित धूसर मृदभांड (PGW).... 22
सिंधु सभ्यता....24
खोज....24
प्रारंभिक और परिपक्व हड़प्पा चरण....24
नगर नियोजन....25
निर्वाह और आर्थिक उत्पादन....25
प्रौद्योगिकी और शिल्प.... 26
व्यापार और विनिमय....27
आस्था और विश्वास प्रणाली....28
हड़प्पा लिपि और लेखन....29
राजनीतिक संगठन....29
कला और मनोरंजन....29
हड़प्पा सभ्यता का पतन और परिवर्तन (लगभग 1800–1900 ईसा पूर्व से).... 29
सिंधु सभ्यता की समकालीन संस्कृतियाँ....29
प्रमुख सिंधु घाटी सभ्यता स्थल और उनकी विशेषताएं.... 30
आर्यों का आगमन और ऋग्वैदिक युग....33
आर्यों का मूल स्थान और पहचान.... 33
भारत में आगमन और प्रारंभिक बस्तियाँ.... 33
वेद क्या हैं?....33

UnderStand UPSC

ऋग्वेद......34
ऋग्वेदिक संस्कृति......34
ऋग्वेदिक काल में अर्थव्यवस्था......34
ऋग्वेदिक काल में जनजातीय राजनीति......35
समाज......35
सामाजिक विभाजन......36
ऋग्वेदिक देवता......36
वेदों, पुराणों और उपनिषदों से कुछ महत्वपूर्ण शब्द......38
उत्तर वैदिक......39
उत्तर वैदिक काल के स्रोत......39
क्षेत्रीय विस्तार और राजनीतिक संरचना......39
उत्तर वैदिक काल में राजनीतिक संगठन......39
उत्तर वैदिक अर्थव्यवस्था (लगभग 1000-600 ईसा पूर्व)......40
उत्तर वैदिक काल में भौतिक संस्कृति......40
उत्तर वैदिक काल में सामाजिक संगठन......40
उत्तर वैदिक काल में धर्म और दर्शन......41
सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र......41
बौद्ध धर्म और जैन धर्म......42
अनीश्वरवादी संप्रदाय......42
जैन धर्म......42
महावीर......42
जैन धर्म का सिद्धांत......43
जैन संप्रदाय......45
जैन धर्म में धार्मिक प्रथाएँ......47
बौद्ध धर्म:......48
संघ की संस्था......49
बौद्ध धर्म और महिलाएं......50
बौद्ध धर्म का सिद्धांत......51
बौद्ध संगीति (परिषद)......52
बौद्ध धर्म के अठारह संप्रदाय......52
महासंघिका......53
हीनयान परंपरा......53
महायान परंपरा – "महान वाहन"......54
वज्रयान / तंत्रयान / मंत्रयान – "हीरक वाहन"......56
● प्रसिद्ध मंत्र: "ओम मणि पद्मे हुम्"।......56
आजीवक......56
महाजनपद और मगध का उदय......59
महाजनपद......59
भारत के सोलह महाजनपद [CSE 2025] [CAPF 2020]......60
मगध के वर्चस्व हेतु उत्तरदायी कारण......61
हर्यंक राजवंश (लगभग 544–413 ईसा पूर्व)......62
शिशुनाग राजवंश (लगभग 412/413–344 ईसा पूर्व)......62
नंद राजवंश (लगभग 344–323 ईसा पूर्व)......62
महाजनपदों के युग में प्रशासन, समाज और आर्थिक जीवन......62
भारत पर ईरानी और मकदूनियाई आक्रमण......64
उत्तर-पश्चिम भारत पर ईरानी आक्रमण......64

UnderStand UPSC

सिकंदर के आक्रमण की पूर्व संध्या पर भारत (326 ई.पू.) 64
सिकंदर का भारत पर आक्रमण (326-325 ईसा पूर्व) 65
मौर्य साम्राज्य 67
मौर्यों का राजनीतिक इतिहास 68
अशोक के शिलालेख 69
मौर्य प्रशासन 71
अर्थव्यवस्था और समाज 72
मौर्योत्तर भारत 74
शुंग (लगभग 185/187–73/75 ईसा पूर्व) 74
हिंद यूनानी (बैक्ट्रियन यूनानी) 74
शक (सीथियन) 75
पश्चिमी भारत के शक क्षत्रप 76
पार्थियन (शक-पहलव) 76
कुषाण 76
मध्य एशियाई संपर्कों का प्रभाव (शक-कुषाण चरण) 78
सातवाहन (पहली शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य से तीसरी शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ तक) 79
कलिंग 79
मौर्योत्तर काल में व्यापार शिल्प 79
सुदूर दक्षिण में इतिहास का आरंभ 82
महापाषणिक संस्कृति (लगभग 1000-300 ईसा पूर्व) 82
भारत में महत्वपूर्ण महापाषाणिक स्थल (***अत्यंत स्मरणीय) 83
संगम युग और सामाजिक विकास 84
संगम राजनीति और सेना 84
संगम अर्थव्यवस्था 84
संगम समाज 85
संगम धर्म 85
पांड्य साम्राज्य 85
चोल साम्राज्य 86
चेर साम्राज्य 86
संगम राज्यों का योगदान 87
संगम साहित्य 87
प्रमुख पुरातात्विक स्थल (तमिलनाडु) 88
गुप्त साम्राज्य 90
गुप्तों का राजनीतिक इतिहास 90
प्रशासनिक, सैन्य और न्यायिक संगठन 92
गुप्त काल में आर्थिक जीवन 93
गुप्त काल में समाज 94
गुप्त काल में धर्म 94
गुप्त काल में साहित्य (लगभग 300-600 ई.) 95
पंच महाकाव्य (शास्त्रीय संस्कृत के महाकाव्य) 96
गुप्त काल में कला और वास्तुकला 96
गुप्त युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 97
गुप्त वंश का पतन [CSE 2021] 97
वाकाटक राजवंश (लगभग तीसरी - छठी शताब्दी ई.) 98
गुप्तोत्तर काल 99
पूर्वी भारत में सभ्यता का प्रसार 99

UnderStand UPSC

पुष्यभूति वंश और हर्ष का उदय.......102
हर्ष का उदय....... 102
कला और शिक्षा.......104
समाज और धर्म....... 104
विज्ञान और सभ्यता की विरासत.......105
प्राचीन भारत में धर्म और सामाजिक वर्ग....... 105
प्राचीन भारत में दार्शनिक प्रणालियाँ....... 105
शासन और लोकतांत्रिक परंपराएँ....... 105
प्राचीन भारत में विज्ञान और भूगोल.......106
कला और वास्तुकला - हड़प्पा से मौर्योत्तर काल तक.......108
सिंधु घाटी सभ्यता (IVC)....... 108
मौर्यकालीन कला और वास्तुकला....... 110
मौर्योत्तर वास्तुकला....... 112
प्रारंभिक मंदिर....... 115
दक्षिण भारत के बौद्ध स्मारक.......116
PYQ विस्तारण [धान्यकटक और कार्ले].......116
पश्चिमी भारत में गुफा परंपरा.......117
पूर्वी भारत में गुफा परंपराएँ....... 119
प्रागैतिहासिक शैल चित्रकारी.......121

Copyright Disclaimer
© 2025 UnderStand UPSC. All rights reserved.
This document and its contents are the intellectual property of UnderStand UPSC.
No part of this material may be copied, reproduced, stored, or transmitted in any form,whether electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise without the prior written permission of the publisher. This content is intended solely for educational purposes and personal use by individuals. Unauthorized distribution, uploading to websites or social media, or commercial usage is strictly prohibited and may lead to legal action under applicable copyright laws. We value original educational efforts and respectfully request all users to acknowledge and uphold content ownership. For permissions or usage inquiries, please contact the official channel of UnderStand UPSC.

UnderStand UPSC

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों,
UPSC परीक्षा के लिए प्राचीन भारतीय इतिहास की तैयारी करना अक्सर चुनौतीपूर्ण लगता है: क्योंकि इसकी विशाल समयसीमा, विविध स्रोत और उनकी व्याख्या सर्वाधिक गंभीर उम्मीदवारों को भी भ्रमित कर सकती हैं। UnderStand UPSC द्वारा इस पुस्तक, के माध्यम से, प्राचीन इतिहास को एक संरचित, स्पष्ट और परीक्षा-उन्मुख तरीके से प्रस्तुत करके इस प्रक्रिया को सरल बनाने का लक्ष्य रखा गया है। शिक्षार्थियों को स्पष्ट और व्यापक समझ प्रदान करने के लिए इस पुस्तक को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है:

भाग I: प्राचीन सामाजिक-राजनीतिक इतिहास

यह खंड प्रागैतिहासिक संस्कृतियों से लेकर साम्राज्यों के उदय, प्रशासनिक प्रणालियों, सामाजिक संरचनाओं, दार्शनिक विकास और प्राचीन भारत को आकार देने वाले गतिशील अंतर्संबंधों तक प्रारंभिक भारतीय समाज और शासन व्यवस्था के विकास का अन्वेषण करता है। प्रत्येक अध्याय को समय-सीमाओं और घटनाओं में सटीकता बनाए रखते हुए अवधारणात्मक स्पष्टता प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

भाग II: प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति

दूसरे भाग में प्राचीन भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला की परंपराओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। प्रारंभिक परीक्षा में संस्कृति के प्रश्न अनिवार्य रूप से आते हैं, इसलिए इस भाग को संक्षिप्त व्याख्याओं और स्पष्ट अंतरों को दर्शाने के लिए तैयार किया गया है।

पुस्तक की प्रमुख विशेषताएं

1. **व्यापक स्रोतों का एकीकरण:**NCERT (नए संशोधित संस्करणों सहित), इग्नू के नोट्स, तमिलनाडु की पाठ्यपुस्तकें और कई मानक संदर्भ पुस्तकें।
2. **पिछले 10 वर्षों के UPSC के विगत वर्षों के प्रश्नों का** विश्लेषण, पैटर्न और अनुमानित अंतर्दृष्टि के माध्यम से यह समझ कि परीक्षा वास्तव में क्या मांगती है।
3. **उच्च गुणवत्ता वाले मानचित्र :** क्षेत्रीय और कालानुक्रमिक समझ को सरल बनाने में सहायक।
4. **स्मृति वर्धक (Mnemonic) तकनीकें** एवं त्वरित पुनरावलोकन और लंबे समय तक याद रखने के लिए स्मृति उपकरण।
5. **संतुलित और त्रुटि-रहित सामग्री:**प्राचीन इतिहास में अक्सर विरोधाभासी विचार, तिथियां और व्याख्या देखने को मिलती हैं। हमने पूरी पुस्तक में तथ्यात्मक सटीकता और वैचारिक शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए अधिकतम सावधानी बरती है।

इतिहास तभी सार्थक होता है जब उसे समझा जाए, न कि रटा जाए। हमें आशा है कि यह पुस्तक आपकी UPSC तैयारी में एक विश्वसनीय साथी बनेगी और आपको स्पष्टता, आत्मविश्वास और जिज्ञासा के साथ सीखने में मदद करेगी।
सीखने का आनंद लें!
Satyam Jain
UnderStand UPSC

UnderStand UPSC

“क्षेत्रों का मानचित्रण और इतिहास की खोज: एक दोहरा अवलोकन"

इतिहास तभी सार्थक होता है जब उसका भूगोल के साथ समेकित कर अध्ययन किया जाए क्योंकि इसमें **मानवीय क्रियाकलापों** और **प्राकृतिक वातावरण के** बीच अंतर-संबंध होता है जिसने **भारत की प्राचीन सभ्यता** के मार्ग को आकार दिया।

प्रमुख भौगोलिक इकाइयाँ
हिमालय और पश्चिमी सीमांत

- हिमालय के पूर्वी इलाके ने दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण चीन से सांस्कृतिक प्रभाव को बढ़ावा दिया, जबकि मध्य इलाके ने भारत और तिब्बत के बीच व्यापार और संपर्क को सुगम बनाया।
- **पश्चिमी सीमांत (हिंदू कुश/अफगानिस्तान/बलूचिस्तान):**
    - **ईरान और भारत** को जोड़ने वाले एक महत्वपूर्ण **सीमांत क्षेत्र के रूप मे काम किया।**
    - **खैबर, गोमल और बोलन दर्रे** जैसे मार्ग **व्यापार, आक्रमणों (यूनानियों, कुषाणों, इत्यादि) और भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म** के फैलने के लिए आवश्यक मार्ग थे।
    - **काबुल** और **कंधार** जैसे शहर मुख्य व्यापार मार्गों पर थे।

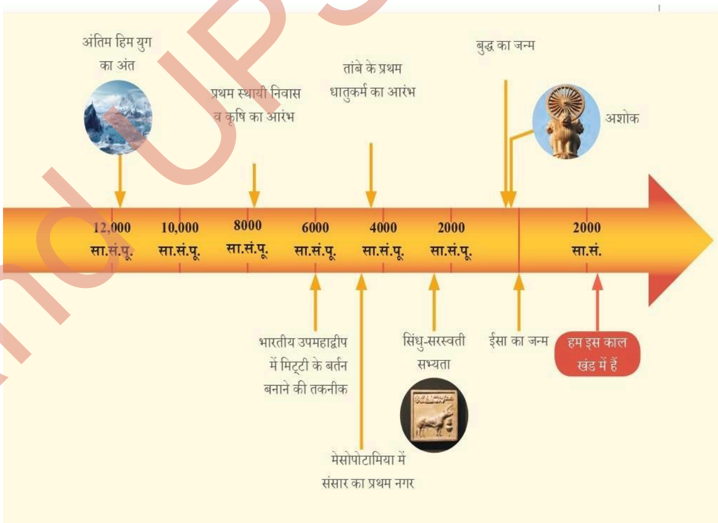

इतिहास में समय मापन

- ग्रेगोरियन **कैलेंडर** अब यह वैश्विक मानक है जो ईसा मसीह के जन्म को संदर्भ बिन्दु के तौर पर प्रयोग करता है:
    - इस संदर्भ *के पश्चात* के वर्षों को **AD (ऐनो डोमिनी)** या, सामान्यतः, **CE (कॉमन एरा)** के रूप में चिह्नित किया जाता है। (उदाहरणार्थ, 1947 ई.)।
    - इस संदर्भ *से पूर्व* के वर्षों को **BC (ईसा पूर्व या सामान्य युग से पहले) के रूप में चिह्नित किया गया है।** (उदाहरणार्थ, 560 ईसा पूर्व)।

इतिहास के स्रोत:

- प्राचीन भारतीय स्त्रोत को अतीत को फिर से निर्मित करने के लिए **साहित्यिक स्त्रोत, पुरातात्विक स्त्रोत** और **विदेशी विवरण में विभाजित किया गया है।**

स्रोतों के प्रकार

1. साहित्यिक स्रोत

- साहित्यिक स्त्रोत ऐसे लिखित अभिलेख हैं जो प्राचीन भारत के सामाजिक-राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं।

वेद – प्राचीनतम भारतीय साहित्य

- वेद **('विद' से = जानना)** का मतलब है **ज्ञान।** वेद **प्राचीनतम पवित्र संस्कृत ग्रंथ हैं,** जिन्हें “**श्रुत**” (सुना/प्रकट) माना जाता है और एक परिष्कृत **मौखिक परंपरा के माध्यम से संरक्षित किया गया है।**
- **वैदिक साहित्य के तीन वर्ग**

1. संहिताएँ (संग्रह)	इसमें भजन, प्रार्थना, आशीर्वाद, मंत्र और यज्ञ के सूत्र सम्मिलित हैं। चार संहिताएँ: ● **ऋग्वेद** - प्रार्थनाओं का ज्ञान **(स्तुति के गीत)।** ● **अथर्ववेद – अथर्वण (जादुई सूत्र)** का ज्ञान। ● **सामवेद – सामन (धुनों)** का ज्ञान, जो भारतीय संगीत और संगीत परंपराओं की नींव रखता है। ● **यजुर्वेद – यजु (यज्ञ के सूत्र)** का ज्ञान और इसके मुख्य पुजारी को **अध्वर्यु कहा जाता था।**
2. ब्राह्मण	● प्रत्येक वेद से सम्बद्ध बलिदानों के **रीति-रिवाज, धार्मिक और रहस्यमयी भावार्थ को** समझाने वाली गद्य टीका।
3. आरण्यक और उपनिषद	● **आरण्यक ("वन ग्रंथ"):** वन में रहने वाले तपस्वियों द्वारा रचित। ● **उपनिषद (“गुप्त सिद्धांत”): ब्रह्म (परम सत्य)** और **आत्मा** पर दार्शनिक चर्चा; वैदिक विचार (वेदांत) का **दार्शनिक उत्कर्ष दिखाते हैं।** ● पुराणों से पहले उपनिषदों की रचना हुई थी [CSE 2024]

UnderStand UPSC

	• सबसे प्राचीन उपनिषद गद्य में हैं जबकि बाद वाले छंदबद्ध हैं। बृहदारण्यक और छंदोग्य इनमें से सबसे प्राचीन हैं। • प्रारंभिक उपनिषद लगभग 1000-500 ईसा पूर्व के हैं, जबकि कई अन्य उपनिषद बाद के काल के हैं।

- **समय:** वैदिक साहित्य को **ईश्वरीय रूप से लिखा हुआ** और लगभग **1,000 वर्षों में विकसित हुआ माना जाता है।**
    - **ऋग्वेद सर्वाधिक प्राचीनतम है** जिसमें **10 मण्डल हैं ; मण्डल II-VII** सर्वाधिक प्राचीनतम **पैतृक मण्डल हैं** जिनमें से प्रत्येक ऋषि परिवार से सम्बद्ध है।
    - **प्रारंभिक वैदिक काल (1500-1000 ईसा पूर्व):** मुख्य रूप से ऋग्वेद के मण्डल II-VII
    - **उत्तर वैदिक काल (1000–500 ईसा पूर्व):** ऋग्वेद के मण्डल I, VIII, IX, X; सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद; साथ ही ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद।

सूत्र ग्रंथ

- **सूत्र ग्रंथ** (लगभग **600–300 ईसा पूर्व**) **श्रुत वेदों के विपरीत स्मृति** (याद किए गए) ग्रंथ हैं; मानव ऋषियों द्वारा रचित, आधिकारिक **लेकिन दिव्य नहीं।**
- **रीति-रिवाजों और कानूनी नियमों** के रूप में कार्य करते हैं और इनमें ये सम्मिलित हैं:
    - **श्रौतसूत्र** – प्रमुख बलिदान अनुष्ठानों के नियम।
    - **गृह्यसूत्र** – घरेलू रीति-रिवाजों और दैनिक कार्यों के लिए निर्देश।
    - **धर्मसूत्र** – आध्यात्मिक और धर्मनिरपेक्ष कानून पर सबसे आरंभिक ग्रंथ।
    - **शुल्वसूत्र -** यज्ञ की वेदियों को बनाने के लिए अलग-अलग तरह के माप बताते हैं।
- **पश्चात के स्मृति सूत्र** जैसे **मनु स्मृति, नारद स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति** सामाजिक-कानूनी संहिताओं का विस्तार करते है: **वर्ण कर्तव्य, राजाओं/अधिकारियों** की भूमिकाएं और **विवाह, संपत्ति** और अपराधों (चोरी, हमला, हत्या, व्यभिचार) के लिए दंड पर कानून निर्धारित करना।

दो संस्कृत महाकाव्य: रामायण और महाभारत

- **महर्षि वाल्मीकि की रामायण** और **महर्षि वेद व्यास की महाभारत** दोनों को **स्मृति और इतिहास** के रूप में बांटा गया है, हालांकि रामायण को काव्य (काव्यात्मक महाकाव्य) भी माना जाता है।
- महाकाव्यों में महाभारत सबसे पुराना है और संभवतः यह ईसा पूर्व 10वीं शताब्दी से लेकर ईस्वी सन् 4वीं शताब्दी तक की स्थिति को दर्शाता है।
- **महाभारत: युद्ध कथा → उत्तर वैदिक, वर्णनात्मक खंड → उत्तर वैदिक, शिक्षाप्रद भाग → मौर्य एवं गुप्त काल के पश्चात।**
- महाभारत में पहले 8,800 श्लोक थे और इसे जय संहिता कहा जाता था। यह बढ़कर 24,000 श्लोकों तक पहुंच गया और भारत बन गया, जिसका नाम शुरुआती वैदिक कबीले के नाम पर रखा गया। आखिरी संस्करण में लगभग 100,000 श्लोक थे और इसे महाभारत या **सतसहस्री संहिता के नाम से जाना जाने लगा।**
- **रामायण** (वाल्मीकि), महाभारत की तुलना में **अधिक एकीकृत साहित्य है।**
- पुरातात्विक संबंध:
    - **अयोध्या → उत्तरी काले पॉलिश वाले भांड (NBPW) युग** से प्रारंभिक बस्तियों के साक्ष्य।
    - **हस्तिनापुर, कुरुक्षेत्र, पानीपत, बागपत, मथुरा, तिलपत, बैराट →चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) से सम्बद्ध हैं।**

वाल्मीकि रामायण (जो सबसे पुराना संस्करण लगता है) के अलावा और भी संस्करण हैं

1. बौद्ध दशरथ जातक (पाली में),
2. कंबन का **रामावतारम** (12वीं शताब्दी, तमिल),
3. तुलसीदास की रामचरितमानस (16वीं शताब्दी, अवधी),
4. इसके अलावा कई मौखिक और दक्षिण -पूर्वी एशियाई संस्करण (तिब्बत, म्यांमार, लाओस, कंबोडिया, इंडोनेशिया में)।

पुराण

- **पुराण = " पुराना ";** पारंपरिक रूप से **व्यास को इसकी रचना का श्रेय दिया जाता है,** लेकिन विभिन्न **लेखकों द्वारा शताब्दियों में रचा गया।**
- **18 महापुराण** (जैसे, **विष्णु, भागवत, ब्रह्मा, शिव, स्कंद**) + असंख्य **उपपुराण।**
- रचना का समय **आरंभिक शताब्दियों से लेकर 14वीं-16वीं शताब्दी ई.** तक का है।
- **उल्लेखित राजवंश**
    - **हर्यक, शिशुनाग, नंद, मौर्य, शुंग, कण्व, आंध्र (सातवाहन)।**
    - उत्तर/मध्य भारत के **'नागा-राजा'।** अधिकांश सूची **गुप्तों (चौथी-छठी ई.) के साथ समाप्त होती है।**
- **भागवत पुराण** – लगभग **10वीं सदी ईसा; स्कंद पुराण – 14वीं सदी ईसा, जिसमें 16वीं सदी ईसा** तक कुछ और भी सम्मिलित था।

UnderStand UPSC

पुराणों के पाँच पंच-लक्षण (मुख्य विषय)	पौराणिक समय चक्र
1. **सर्ग** – संसार की रचना 2. **प्रतिसर्ग** – पुनः निर्माण 3. **मन्वंतर** - मनुओं के चक्र 4. **वंश** – देवताओं/ऋषियों की वंशावली 5. **वंशानुचरित** - शाही राजवंशों की वंशावली (जैसे, **सूर्यवंश, चंद्रवंश**)	• **4 युग** : सतयुग (कृत) → त्रेता → द्वापर → कलि • **1 महायुग** = 4 युग • **1 कल्प** = 1,000 महायुग • **1 कल्प में 14 मन्वंतर होते हैं।** • समय **चक्रीय है** → विनाश के पश्चात **फिर से निर्माण; धर्म के पतन और पुनरुत्थान से जुड़ा हुआ है।**

बौद्ध साहित्य

- त्रिपिटक ("तीन टोकरियाँ"), बुद्ध की मृत्यु के पश्चात रचित, उनके समय की सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था और **सोलह महाजनपदों को दर्शाती हैं।** वे **पाली, चीनी और तिब्बती** संस्करणों में मौजूद हैं जिसमें **पाली त्रिपिटक** सबसे पुराना है।
- **तीन पिटक:**
  - **सुत्त पिटक :** कहानियों, कविताओं और संवाद में बुद्ध के सिद्धांत; इसमें **पाँच निकाय सम्मिलित हैं**, मुख्यतः **जातक, थेरगाथा** और **थेरीगाथा** के साथ **खुद्दक निकाय।**
  - **विनय पिटक : 227 मठों के नियम,** प्रत्येक के पीछे की कहानियों के साथ; बुद्ध के जीवन, घटनाओं और पहले विभाजन तक **संघ के इतिहास पर सामग्री।**
  - **अभिधम्म पिटक :** पश्चात में **थेरवाद परंपरा** में बुद्ध के **दर्शन को** सूचियों, सारांशों और प्रश्नोत्तर के माध्यम से व्यवस्थित रूप मे प्रस्तुत किया गया।
- **खुद्दक निकाय:**
  - **जातक:** बुद्ध की पिछले जन्म की कहानियाँ (मानव/पशु/पौराणिक प्राणियों के रूप में), जो बौद्ध धर्म से पहले की मौखिक परंपराओं से ली गई हैं; **भरहुत, सांची, नागार्जुनकोंडा, अमरावती** में दिखाई गई है।
  - **थेरगाथा** (वरिष्ठ भिक्षु) और **थेरीगाथा** (वरिष्ठ भिक्षुणी): प्रारंभिक संघ कविताएँ; **थेरीगाथा** भारत में महिलाओं द्वारा लिखी गई सर्वाधिक पुरानी जीवित काव्य रचना है।
- **गैर-सैद्धांतिक बौद्ध साहित्य:**
  - **मिलिंदपन्हो (1 ईसा पूर्व - 1 ईसवी):** राजा **मिनांडर** और भिक्षु **नागसेन के बीच** दर्शन पर संवाद।
  - **महावंश** और **दीपवंश :** बौद्ध धर्म के प्रसार पर सिंहली इतिहास - बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति से लेकर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व भारत और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व श्रीलंका तक।
  - **नेत्तिगन्ध/नेत्तिपकरण :** बुद्ध की शिक्षाओं का संक्षिप्त विवरण।
  - **निदानकथा : बुद्ध की** पहली संबद्ध जीवनी।

महत्वपूर्ण प्राचीन कृतियाँ [CSE 2024]	
सर्वास्तिवाद विनय	**संघभूति,** सर्वास्तिवाद विनय पर एक टीका के लेखक थे और वे सर्वास्तिवाद संप्रदाय के एक भारतीय भिक्षु थे, जिन्होंने चौथी शताब्दी ईस्वी के उत्तरार्ध में चीन की यात्रा की थी। यह **सर्वास्तिवाद संप्रदाय की मठवासी संहिता है** जिसमें **भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए नियम हैं।** इस ग्रंथ पर एक **टीका** भी लिखी गयी है। यह **शुरुआती बौद्ध (हीनयान) परंपरा से संबंधित है।**
प्रज्ञापारमिता सूत्र	एक **महायान बौद्ध ग्रंथ जो शून्यता (शून्यता)** और **पूर्ण ज्ञान** पर केंद्रित है। **महायान दर्शन का मुख्य ग्रंथ है।**
विशुद्धिमग्ग	**बुद्धघोष** (5वीं सदी ईसा)**द्वारा लिखित।** बौद्ध धर्म के अभ्यास को समझाने वाला एक खास **थेरवाद ध्यान** और **नैतिक संहिता।** **मन की शुद्धि** और **ज्ञान के मार्ग पर** बल देता है।
ललिताविस्तार	सर्वास्तिवाद संप्रदाय से संबंधित, लेकिन महायान तत्वों से प्रबल रूप से प्रभावित, बुद्ध की जीवनी ललितविस्तार (प्रथम-द्वितीय शताब्दी) संस्कृत और प्राकृत-संस्कृत के मिश्रण में लिखी गई है।

जैन साहित्य:

- **भाषाएँ:** शुरुआती जैन शिक्षाएँ **(14 पूर्व)** मौखिक थीं; पश्चात के ग्रंथ **अर्ध-मगधी** (श्वेताम्बर) और **जैन सौरसेनी** (दिगम्बर) **में प्रकाशित हुए।**
- **4वीं ईसा पूर्व** में **पाटलिपुत्र में**, धर्मसूत्र का **12 अंगों में** पुनर्निर्माण किया गया **(आचारांग सुत्त और भगवती सुत्त सबसे महत्वपूर्ण जैन धर्मसूत्र हैं)** और **5वी ईसा में वल्लभी में, श्वेतांबर धर्मसूत्र** लिखा गया।
- **श्वेताम्बर ग्रंथ: इसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 चेदसूत्र , 4 मूलसूत्र** सम्मिलित हैं।
- **दिगंबर मत:** मूल पूर्वाचार **खो गए** ; उन्होंने **श्वेतांबर सिद्धांत को नकार दिया** और पश्चात के आचार्य ग्रंथों का प्रयोग किया।
- **ऐतिहासिक महत्व:** भारत के **सिद्धांत, मठवासी जीवन** और **प्रारम्भिक सामाजिक-धार्मिक इतिहास के अध्ययन** के लिए उपयोगी।

UnderStand UPSC

संगम साहित्य

- प्रारंभिक **संगम साहित्य (4 ईसा पूर्व से 1 ईस्वी तक) प्रेम और युद्ध** पर प्रारंभिक शास्त्रीय तमिल काव्य है जो चाट-भाट(कवि) **मौखिक परंपराओं में निहित है।**
- **कावेरीपट्टनम, यवन काली मिर्च-सोने के व्यापार,** शराब और गुलामी का वर्णन पुरातत्व और विदेशी जानकारी से मिलता है।

प्रारंभिक भारत में जीवनी, काव्य और नाटक

- **अश्वघोष ने** बुद्धचरित, शारिपुत्रप्रकरण, सौंदरानंद की रचना की; **भास** ने पंचरात्र, दूतवाक्य और स्वप्न-वासवदत्ता जैसे नाटक की रचना की।
- **कालिदास** (चौथी-पांचवीं शताब्दी) ने अभिज्ञान-शाकुंतलम, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् और रघुवंश, कुमारसंभवम और मेघदूतम् जैसी कविताएँ लिखीं, जो **गुप्त संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं।**
- **विशाखदत्त का मुद्राराक्षस** (7वीं-8वीं शताब्दी) में चाणक्य की रणनीति दिखाई गई है; देवीचंद्रगुप्तम में रामगुप्त के शासनकाल का एक वर्णन बताया गया है।
- **पंचतंत्र (विष्णु शर्मा द्वारा)** और **कथासरित्सागर (सोमदेव द्वारा)** जैसी कहानियों में उत्तम लोक कथाएँ और नैतिक कहानियाँ हैं।
- **बाणभट्ट का हर्षचरित (7वीं ईसा):** सर्वाधिक प्राचीनतम जीवित भारतीय जीवनी और **बिल्हण का विक्रमांकदेवचरित (12वीं ईसा):** चालुक्य राजा **विक्रमादित्य VI के बारे में है।**
- **शूद्रक** की **मृच्छकटिकम (मिट्टी की गाड़ी) – गुप्त काल** के दौरान मध्यम और निम्न-वर्ग के जीवन को प्रदर्शित करती है और सामाजिक भ्रष्टाचार की आलोचना करती है।
- **पाणिनि की अष्टाध्यायी - समकालीन समाज, राजनीति और धर्म** को प्रतिबिंबित करने वाला एक व्याकरण पाठ।
- **गार्गा** द्वारा रचित **गार्गी संहिता में यवनों** के आक्रमणों का उल्लेख है।
- **क्षेमेंद्र की बृहत्कथा मंजरी – मौर्य काल के दौरान की घटनाओं पर चर्चा करता है।**
- **भास की प्रतिमानटकम** - मूर्तियों की स्थापना (**देवकुल संस्कार**) का उल्लेख करने वाला पहला ग्रंथ।

महत्वपूर्ण प्राचीन भारतीय कार्य [CSE 2024]	
कृति	**मुख्य विवरण**
मध्यम-व्यायोग (भास)	**महाभारत** पर आधारित संस्कृत नाटक, जो **भीम और घटोत्कच** पर केंद्रित है।
काव्यालंकार (भामह)	**संस्कृत काव्यशास्त्र** पर ग्रंथ; **अलंकारों,** काव्यात्मक गुणों और एक उत्कृष्ट कवि की विशेषताओं के बारे में वर्णन है।
नाट्यशास्त्र (भरतमुनि)	**नाटक, नृत्य, संगीत, रंगमंच** पर प्राचीन पाठ ; इसमें **रस सिद्धांत,** अभिनय और मंच कला सम्मिलित है।
महाभाष्य (पतंजलि)	**पाणिनि की अष्टाध्यायी** और **कात्यायन के वार्तिकों** पर प्रमुख **व्याकरण टीका;** इसमें भाषा, **दार्शनिक और तार्किक चर्चाओ** का मिश्रण है।

2. विदेशी विवरण

- ग्रीक स्रोत में **सैंड्रोकोट्टस का वर्णन है** जिसे **विलियम जोन्स** ने **चंद्रगुप्त मौर्य** के तौर पर पहचाना था।
- **मेगस्थनीज की इंडिका** (जिसे पश्चात के लेखकों ने जाना) में मौर्य प्रशासन और समाज के बारे में वर्णन है।
- ग्रीक-रोमन कृति - **पेरिप्लस, टॉलेमी की भूगोल** और **स्ट्रैबो, एरियन, प्लिनी के ग्रंथ** - भूगोल और **हिंद महासागर व्यापार पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं।**
- चीनी तीर्थयात्रियों **फाह्यान (गुप्त काल)** और **ह्वेनत्सांग (हर्ष के शासनकाल)** ने धार्मिक स्थलों और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को वर्णित किया।
- **अल-बरूनी की तहकीक-ए-हिंद, जिसे किताब-उल-हिंद** के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय विज्ञान, भूगोल, दर्शनशास्त्र का विवरण देती है और **गुप्त युग की पहचान करती है।**

ग्रीक और रोमन विवरण

नाम	विवरण
मेगस्थनीज	**इंडिका** लिखी (जो अब लुप्त हो गई है, केवल अंशों के आधार पर ज्ञात)। इसमें मौर्य प्रशासन, **पाटलिपुत्र शहर,** जाति व्यवस्था और भारत के भूगोल के बारे में वर्णन है।

UnderStand UPSC

स्ट्रैबो	यूनानी भूगोलवेत्ता; अपनी ***कृति भूगोल में भारत का उल्लेख*** *करते हैं*। व्यापार, नदियों और शहरों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, प्रारंभिक यात्रियों के संक्षिप्त विवरण।
प्लिनी द एल्डर	रोमन प्रकृतिवादी ने **नेचुरल हिस्ट्री लिखी।** भारत की संपदा, वनस्पतियों, जीवों और समुद्री मार्गों के माध्यम से रोमन-भारतीय व्यापार संबंधों का उल्लेख किया।
टॉलेमी	यूनानी भूगोलवेत्ता; मानचित्र संकलित किए और *भूगोल लिखा*। भारत की नदियों, पहाड़ों और व्यापार मार्गों के बारे में विवरण प्रदान किया।
एरियन	यूनानी इतिहासकार; ***इंडिका और एनाबैसिस ऑफ अलेक्जेंडर*** *लिखा*। भारत में सिकंदर के अभियान और भारतीय सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला।

चीनी विवरण

नाम	**विवरण**
फ़ाहियान (फाह्यान)	चीनी बौद्ध भिक्षु **(5वीं सदी ईसा); चंद्रगुप्त II (चंद्रगुप्त विक्रमादित्य)** के शासनकाल में **भारत आया था।** [CSE 2025] ***अपनी किताब फोगुओ जी/फो-क्यो-की*** में बौद्ध मठों, नालंदा और सामाजिक-आर्थिक *स्थितियों का वर्णन किया* है।
ह्वेनत्सांग	चीनी बौद्ध भिक्षु और विद्वान **(7वीं सदी ईसा);** हर्ष के दरबार में आए थे। उनकी रचना **सी-यू-की में** भारतीय संस्कृति, नालंदा विश्वविद्यालय और हिंदू-बौद्ध बातचीत के बारे में विस्तृत विवरण है।
यिजिंग [इ-त्सिंग]	चीनी बौद्ध भिक्षु **(7वीं सदी ईसा):** नालंदा में समय बिताया और **'ए रिकॉर्ड ऑफ़ बुद्धिस्ट प्रैक्टिसेज़' लिखी।** यह भारत में मठ के नियमों और बौद्ध प्रथाओं पर केंद्रित है।

3. पुरातत्व

- पुरातत्व में अवशेष सामग्री - **मिट्टी के बर्तन, बनावट, हड्डियां, सिक्के, मुहरें, लिखावट, अनाज, परागण** - का अध्ययन किया जाता है जो इतिहास को आवश्यक सहायता प्रदान करता है और **प्रागैतिहासिक से लेकर ऐतिहासिक काल तक के समय का पुनर्निर्माण करती है।**
- खुदाई से **व्यापार, राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज, धर्म, दैनिक जीवन के बारे में पता चलता है** और **सिंधु घाटी सभ्यता के लिए, हड़प्पा की लिपि न समझी जाने की** वजह से पुरातत्व विज्ञान आवश्यक है।

सिक्के

- मुद्राशास्त्र में सिक्कों का अध्ययन किया जाता है - धातु मुद्रा जिसका आकार, वज़न और आधिकारिक मुहर तय होता है। सिक्के का वह भाग जिस पर संदेश लिखा होता है उसे **अग्रभाग** कहते हैं तथा विपरीत भाग को **पृष्ठभाग** कहते हैं।
- **दूसरे नगरीकरण** के दौरान बढ़ते राज्यों और व्यापार के साथ सिक्के दिखाई दिए; आरंभिक सिक्कों में **तांबा, चांदी, सोना और सीसा प्रयुक्त होता था। कुषाण साँचे** बड़े पैमाने पर ढलाई दिखाते हैं।
- सबसे पहले **आहत सिक्के** (ज़्यादातर चांदी के) थे, जिसमें **मगध प्रकार के सिक्के** अधिकांश प्रयुक्त होते थे। शुरुआती सिक्कों में **प्रतीक होते थे:** पश्चात के सिक्कों पर **राजा, देवी-देवता, नाम और तारीखें** (जैसे, **पश्चिमी क्षत्रप**, शक काल) दिखाई जाती हैं।
- सिक्के राजनीति और अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण मे सहायक होते हैं - **यौधेय/मालव** सिक्कों में *गण का ज़िक्र है* जो गणतंत्र को प्रदर्शित करता है; **जहाजों वाले सातवाहन** सिक्के समुद्री व्यापार का संकेत देते हैं।
- मौर्य काल के पश्चात के कई धातुओं के सिक्के बढ़ते व्यापार को दिखाते हैं। **गुप्त काल के दीनार** शाही चित्रों वाले उच्च गुणवत्ता के स्वर्ण सिक्के थे, जबकि **गुप्त** काल के पश्चात सोने की शुद्धता में गिरावट देखी गई।

शिलालेख

- **शिलालेख** पत्थर, धातु या मिट्टी जैसी टिकाऊ सामग्रियों पर उत्कीर्ण लेख होते हैं, जिनमें आदेश, दान, घटनाओं और उपलब्धियों को दर्ज किया जाता है।
- पुरालेखशास्त्र, मुहरों, प्लेटों, मंदिर की दीवारों, चट्टानों और खंभों पर लिखे इन अभिलेखों का अध्ययन है।
- सबसे पुराने शिलालेख **हड़प्पा लिपि में हैं** जिन्हें समझा नहीं जा सका है, जबकि सबसे पहले समझे गए **शिलालेख अशोक के शिलालेख हैं** (जिन्हें **जेम्स प्रिंसेप ने 1837** मे पढ़ा था) जो **ब्राह्मी** और **खरोष्ठी** में लिखे गए थे।
- शुद्ध **संस्कृत शिलालेख पहली शताब्दी ईसा पूर्व** के प्रतीत होते हैं और **5वीं शताब्दी ई.** तक प्रमुख हो गये।
- **शिलालेखों के प्रकार: शाही आदेश, स्मृति, स्मारक, दान, तांबे की प्लेट अनुदान, प्रशस्ति, उपयोगिता अभिलेख, विविध** (लेबल, भित्तिचित्र, मुहरें)।

UnderStand UPSC

शिलालेख	स्थल	कालानुक्रम/शासक	महत्व
अशोक के शिलालेख	भारत, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान	मौर्य साम्राज्य (अशोक)	धम्म (बौद्ध सिद्धांत) को बढ़ावा देना; प्रशासनिक, सामाजिक नैतिकता और अशोक की नीतियों पर चर्चा की गयी है।
हाथीगुम्फा शिलालेख	उदयगिरी गुफाएं, ओडिशा	खारवेल (पहली शताब्दी ईसा पूर्व)	खारवेल की जीत, सामाजिक कार्यों और जैन धर्म को संरक्षण देने की जानकारी।
इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख	इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश	समुद्रगुप्त (गुप्त काल)	समुद्रगुप्त की एक योद्धा और संरक्षक के रूप में प्रशंसा; उनके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित।
नासिक गुफा शिलालेख	नासिक, महाराष्ट्र	सातवाहन	गौतमीपुत्र सातकर्णी और उनकी उपलब्धियों का ज़िक्र; बौद्ध गुफाओं का संरक्षण।
जूनागढ़ शिलालेख	जूनागढ़, गुजरात	रुद्रदामन प्रथम (दूसरी शताब्दी ई.)	सुदर्शन झील की मरम्मत की जानकारी; रुद्रदामन की उपलब्धियों और संस्कृत के संरक्षण पर प्रकाश डाला गया।
महरौली लौह स्तंभ शिलालेख	दिल्ली	गुप्त काल (चंद्रगुप्त द्वितीय)	सैन्य उपलब्धियों का स्मरण; उस काल की उन्नत धातु विज्ञान का प्रदर्शन।
ऐहोल शिलालेख	ऐहोल, कर्नाटक	पुलकेशिन द्वितीय (चालुक्य)	हर्ष की पराजय सहित पुलकेशिन द्वितीय की विजयों का गुणगान; दक्कन के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण।
बोगाज़कोई शिलालेख	तुर्की	मितानी किंग्स	वैदिक देवताओं इंद्र, वरुण और मित्र का उल्लेख; इंडो-आर्यन सांस्कृतिक संबंधों के लिए महत्वपूर्ण।
मंदसौर शिलालेख	मंदसौर, मध्य प्रदेश	कुमारगुप्त प्रथम (गुप्त काल)	सूर्य मंदिर के निर्माण का उल्लेख; गुप्त वास्तुकला और धार्मिक संरक्षण पर प्रकाश डाला गया।
गिरनार शिलालेख	गिरनार, गुजरात	मौर्य और मौर्योत्तर	इसमें अशोक के शिलालेख और रुद्रदामन के शिलालेख सम्मिलित हैं।
मंदसौर स्तंभ शिलालेख	मंदसौर, मध्य प्रदेश	यशोधर्मन (छठी शताब्दी ई.)	हूणों पर विजय का स्मरण कराता है।
बादामी शिलालेख	बादामी, कर्नाटक	पुलकेशिन प्रथम (चालुक्य)	चालुक्य वंश और उनके सत्ता में आने पर प्रकाश डालता है।
ग्वालियर शिलालेख	ग्वालियर, मध्य प्रदेश	मिहिर भोज (प्रतिहार)	प्रतिहार शासक की विजय और प्रशासन की जानकारी।
नानेघाट शिलालेख	नानेघाट, महाराष्ट्र	सातवाहन रानी नागनिका	वैदिक यज्ञों के लिए दान का अभिलेख; एक रानी द्वारा जारी किए गए शिलालेखों का दुर्लभ उदाहरण।
बराबर गुफाओं का शिलालेख	बराबर पहाड़ी, बिहार	मौर्य काल (अशोक)	आजीविक संप्रदाय को दान किया गया; भारत में सबसे पुरानी चट्टान काटकर बनाई गई गुफाएँ।

UnderStand UPSC

मानव इतिहास का आरंभ

- प्रारम्भिक **होमो सेपियंस** (लगभग 300,000 वर्ष पूर्व) **प्रस्तर के औजारों** और **आग** का प्रयोग करने वाले **शिकारी-संग्रहकर्ताओं से विकसित होकर खेती** और **पशुपालक** बसे हुए समुदाय बने जिससे गाँव, **व्यापार तंत्र** और **धातु (तांबा, लोहा) का प्रयोग आरंभ हुआ जिसने प्रारम्भिक सभ्यताओं** की नींव रखी।

प्रागैतिहासिक काल

- **प्रागैतिहासिक काल, लेखन से पूर्व के मानव समाजों का अध्ययन करती है** और मानव जीवन के आरंभ और विकास का पता लगाती है।
- **आद्य-इतिहास** (तीसरी से पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के आरंभ) पालतू पशुओं, खेती की गई फसलों, उभरते शिल्पों और **सिंधु घाटी में नगरीकरण** के उदय के साथ **स्थायी कृषि-पशुपालन जीवन की ओर संक्रमण को चिह्नित करता है।**
- मानव के अतीत को **पाषाण, कांस्य** और **लौह युग में विभाजित किया गया है** जो औज़ारों, खान-पान, सामाजिक जीवन, अन्त्येष्टि और कला में हुए परिवर्तनों को दिखाता है। **पाषाण युग को पुरापाषाण, मध्यपाषाण** और **नवपाषाण** (ग्रीक *लिथोस* , "पाषाण" से) में विभाजित किया गया है।

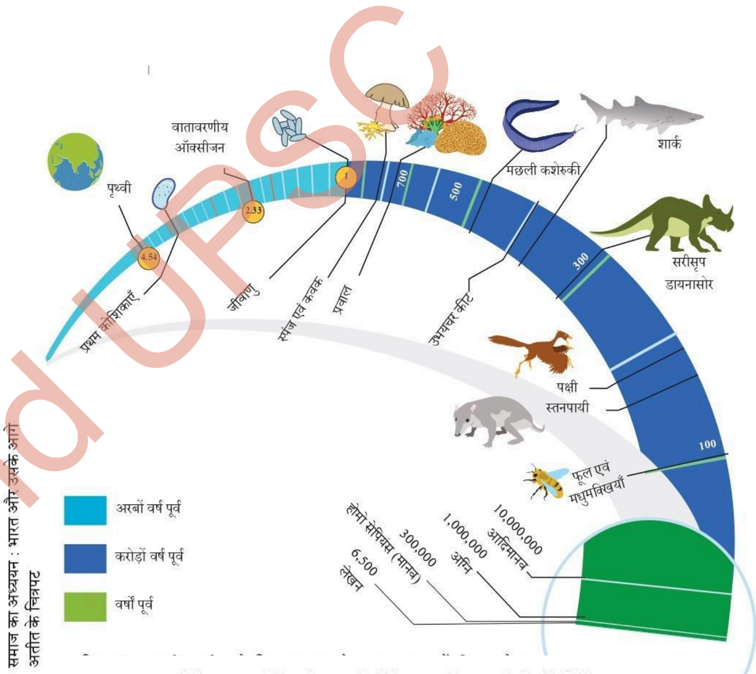

मानव अतीत और पाषाण युग के उपविभाग

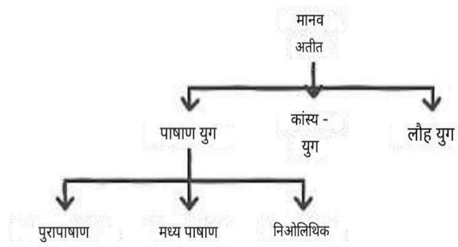

पुरापाषाण युग

- **पुरापाषाण** (यूनानी *पैलियो* = पुराना, *लिथिक* = प्रस्तर), **प्लीस्टोसीन** (लगभग 2 मिलियन वर्ष पूर्व) के **प्राचीन पाषाण युग को संदर्भित करता है,** जब प्रारम्भिक मानव पहाड़ियों के पास रहते थे, **प्रस्तर के औजार प्रयोग करते थे** और बड़े स्तर पर बर्फ होने के बावजूद उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में जीवित रहते थे।
- विविध उपकरण सामग्री- **क्वार्टजाइट , बेसाल्ट , चूना पत्थर।** इसे **निम्न, मध्य** और **ऊपरी पुरापाषाण** (लगभग **500,000-10,000 ईसा पूर्व**) में विभाजित किया गया है।

निम्न पुरापाषाण काल (2 मिलियन–1,00,000 वर्ष पूर्व)

- **होमो इरेक्टस** जैसे प्रारंभिक मनुष्य भारत में रहते थे। प्रथम औजारों की खोज **पल्लवरम** में **रॉबर्ट ब्रूस फुट (1863)** ने की थी।
- एकमात्र पुष्ट जीवश्म: **नर्मदा मानव** (प्राचीन *होमो सेपियंस*) **हथनोरा,** मध्यप्रदेश से।
- सम्बद्ध पशु जीवाश्मों में **एलिफस नामाडिकस, स्टेगोडोन गणेशा, बॉस नामाडिकस, इक्वस नामाडिकस शामिल हैं**।
- **उपकरण परंपरा**
  - **ऐश्यूलियन:** हाथ की कुल्हाड़ी और विदारक; पश्चिमी घाट, तटीय और उत्तर-पूर्वी भारत को छोड़कर शेष स्थलों पर आम।
  - **सोहानियन:** चॉपर्स और काटने के उपकरण; इसका नाम **सोहन घाटी** (पाकिस्तान) के नाम पर रखा गया है।
- **महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाण स्थल:** सिंगी तालाब (राजस्थान), भीमबेटका, आदमगढ़ (मध्य प्रदेश), ललितपुर (उत्तर प्रदेश), इसामपुर (कर्नाटक), पैसरा (बिहार), चिरकी-नेवासा, मोरगांव (महाराष्ट्र), हुंसगी और येदियापुर (कर्नाटक), अत्तिरमपक्कम (तमिलनाडु)।

मध्य पुरापाषाण संस्कृति (100,000 से 40,000 वर्ष पूर्व)

- **मध्य पुरापाषाण काल** की विशेषता **फलक उपकरण** है जिस कारण इसे **फलक उपकरण उद्योग** नाम मिला (जो फ्रांस के ले मॉस्टियर की **मॉस्टरियन संस्कृति के समानांतर है)।**
- भारत में, **एच.डी. सांकलिया ने नेवासा (1956)** और **गोदावरी घाटी** में मध्य पुरापाषाण काल के परतदार उपकरणों की पहचान की और इस उद्योग को **नेवासियन** कहा।
- इसमें खुरचनी, **वेधक, तीक्ष्ण सिरे, चाकू** और कुछ हाथ की कुल्हाड़ी जैसे उपकरण शामिल हैं।
- लोग **खुले स्थलों, गुफाओं और चट्टानों के आश्रयों में रहते थे, शिकारी-संग्रहकर्ता बने रहे** और **चर्ट, जैस्पर, कैल्सेडनी और क्वार्ट्ज़ (स्फटिक) जैसी वस्तुओं का प्रयोग करते थे।**

UnderStand UPSC

- लेवलोइसियन **तकनीक** एक **तैयार कोर तरीका है** जिसमें कछुए के आकार के कोर को ध्यान से आकार दिया जाता है ताकि एक ही आघात से वांछित परतदार उपकरण बन जाए।
- **महत्वपूर्ण विशेषतायें:** छोटे औजार, हाथ की कुल्हाड़ी का कम प्रयोग और **कोर-तैयारी तकनीकें।**
- **महत्वपूर्ण मध्य पुरापाषाण स्थल:** डीडवाना (राजस्थान), हिरन घाटी (गुजरात), पोटवार पठार (सिंधु और झेलम नदियों के बीच), संघाओ गुफा (उत्तर-पश्चिमी सीमांत प्रांत, पाकिस्तान), बूढ़ा पुष्कर (राजस्थान), लूनी नदी तंत्र, चिरकी नेवासा (महाराष्ट्र), कालपी (उत्तर प्रदेश)।

उच्च पुरापाषाण संस्कृति (40,000 से 10,000 वर्ष पूर्व)

- उच्च **पुरापाषाण काल औजारों के नवाचार और उन्नत संज्ञानात्मक क्षमताओं** के लिए जाना जाता है।
- उच्च पुरापाषाण में प्रस्तर के औजारों की तकनीकी में बड़ी प्रगति हुई, जिसमें लंबे, समानांतर-पार्श्व ब्लेड बनाए गए। एक ही प्रिज्मेटिक या दांतीदार कोर से कई ब्लेड निकाले गए, जिससे उसे एक खास आकार मिला - इसलिए इसका नाम **"प्रिजमीय कोर" या "दांतीदार-कोर" तकनीक पड़ा।**
- फिर इन ब्लेडों के एक किनारे को मोटा करके उन्हें बेहतर बनाया गया, इस प्रक्रिया को **बैकिंग कहते हैं** जिससे **बैक्ड ब्लेड उपकरण (इकधार औजार) बनाए गए।**
- भारत में, **ब्लेड और बरिन जैसे विशिष्ट औजार** आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र, भोपाल और **छोटानागपुर पठार में दिखाई देते हैं जिनमें भीमबेटका** प्रमुख गुफा स्थल हैं।
- **प्रस्तर के औजार और उद्योग**
    - उच्च **पुरापाषाण** उद्योग की विशेषता **ब्लेड, हड्डी के औजार** और **सिलिका समृद्ध सामग्री से बने लघु पाषाण उपकरण जिनमें कुरनूल गुफाओं (आंध्र प्रदेश)** से मिले खास हड्डी के औजार और जानवरों के अवशेष शामिल हैं।
- **वितरण**
    - उच्च पुरापाषाण समूह भारत भर में **गुफाओं और खुले स्थानों में रहते थे- कुरनूल, बाघोर प्रथम, पटणे, रोहिरी पहाड़ियाँ, चोपानी मांडो, पैसरा, लालमई पहाड़ियाँ, हाओरा-खोवाई घाटियाँ** और **मुच्छटला चिंतामनु गवी - श्रीलंका** में भी लघुपाषाण उपकरण और जीवाश्मों के साथ।
    - **ज्वालापुरम, पटणे, भीमबेटका, बटाडोम्बा - लेना** और **फा-हियान गुफा** में **शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके और मनके** पाए गए हैं।
- **विशेषताएँ: समृद्ध कला** (जैसे, भीमबेटका चित्रकारी), **व्यक्तिगत आभूषण** और एक परिष्कृत **फलक लघु पाषाण उद्योग,** जिसमें इस युग से जुड़ी विशिष्ट **हरे रंग की चित्रकारी** शामिल है।
- **बाघोर (उत्तर प्रदेश):** सबसे प्राचीन ज्ञात **उच्च पुरापाषाण मंदिर,** जो **अवशेष के घेरे के अंदर बलुआ प्रस्तर के ब्लॉक से बना है।**

मध्यपाषाण संस्कृति

- **उच्च पुरापाषाण काल** लगभग **8000 ईसा पूर्व** में समाप्त हो गया। जैसे ही हिम युग (Ice Age) समाप्त हुआ और उसके स्थान पर **गर्म व शुष्क होलोसीन** (Holocene - वर्तमान/नव-थर्मल चरण) काल आया जिससे अधिक गतिशीलता बढ़ी और विविध पारिस्थितिक क्षेत्रों (diverse eco-zones) में निवास संभव हुआ।
- **मानसून पैटर्न स्थापित होने के साथ** - जैसे, **डीडवाना में मीठे पानी की झीलें-** यह पुरापाषाण और नवपाषाण के बीच एक **परिवर्तन का दौर बन गया।**
- **मध्यपाषाण** काल की पहचान **माइक्रोलिथ (लघुपाषाण) थी** जिसमें बेलन घाटी स्पष्ट **पुरापाषाण-मध्यपाषाण-नवपाषाण** उत्तराधिकार दिखाती है।

स्थल

- **मध्यपाषाण स्थल** सभी **पारिस्थितिक क्षेत्रों में पाई जाती हैं।** मुख्य क्षेत्रों में **छोटानागपुर, मध्य भारत** और **कृष्णा नदी के दक्षिण के इलाके शामिल हैं।**
- मुख्य स्थल: **पैसरा, लंघनाज, बाघोर II, चोपानी मांडो, सराय नाहर राय, महादाहा, दमदमा, संगनाकल्लू, किब्बानहल्ली, कालक्रम: मध्यपाषाण संस्कृति** दुनिया भर में अलग-अलग है, जो **खेती से पूर्व के शिकारी-संग्रहकर्ताओं से सम्बद्ध है;** लेवेंट (पूर्वी भूमध्य सागर) में, यह **20,000–9500 ईसा पूर्व तक फैला है,** भारत में **लगभग 10,000 ईसा पूर्व से।**

अर्थव्यवस्था

- **निर्वाह:** शिकार करना, मछली पकड़ना, संग्रहण; प्रारम्भिक दौर में **खेती नहीं।**
- **संक्रमण:** परवर्ती मध्यपाषाण में **जानवरों को पालतू बनाया गया** जिससे नवपाषाण जीवन-शैली आरंभ हुई।
- **पालतू पशु: मवेशी, भेड़, बकरी, सुअर, कुत्ता** (स्थल: कानेवाल, लोटेश्वर, रतनपुर, आदमगढ़, भीमबेटका); कानेवाल में **ऊंट।**
- **शिकार किए गए जानवर: मवेशी, गौर, भैंस, बारहसिंगा, सांभर, चीतल, हिरन, हॉग हिरण, नीलगाय, साही, सियार, खरगोश, लोमड़ी, मॉनिटर छिपकली, कछुआ, मछली; गैंडे और हाथी की हड्डियां भी मिलीं।**
- **कला: भीमबेटका चित्रकारी** में पुरुषों और महिलाओं को शिकार करते, आग का प्रयोग करते, खाना भूनते हुए दिखाया गया है।

शिविर और घर

- **मध्यपाषाण कालीन** लोग **अत्यधिक गतिशील** थे और शिकार तथा संग्रहण पर निर्भर थे; **अस्थायी आश्रयों** में **स्तंभ-छिद्रों वाली गोलाकार झोपड़ियाँ, सरकंडे के निशानों वाली जली हुई मिट्टी** शामिल थीं।

UnderStand UPSC

- **चोपानी मंडो, दमदमा (उत्तर प्रदेश), बागोर, तिलवाड़ा (राजस्थान)** में **अंडाकार/गोलाकार झोपड़ियाँ और घास-मिट्टी के अवशेष** पाए गए हैं।

शवाधान

- मध्यपाषाण काल के लोग **शवाधान की प्रथा का पालन** करते थे जो **विश्वासों और सामाजिक बंधनों** का संकेत देता है। **महादाहा, दमदमा और सराय नाहर राय (उत्तर प्रदेश)** में मानव कंकाल मिले हैं।
- **महादाहा** में, **एक पुरुष और एक महिला** को एक साथ दफनाया गया था; एक शवगाह में **शव की सामग्री** के रूप में एक **हाथीदांत का पेंडेंट** भी शामिल था।

कला

- **प्रारंभिक मानव ने कला** का सृजन किया: ज्यामितीय उत्कीर्णन **(चंद्रावती), अस्थि वस्तुएं (भीमबेटका)** और **एक अलंकृत मानव दांत।**
- **भीमबेटका, पचमढ़ी, रायसेन, दक्षिण मिर्जापुर के शैलचित्रों** में शिकार, मछली पकड़ना, नृत्य, जाल बिछाना दर्शाया गया है; **रगड़ के निशानों वाला हेमेटाइट** वर्णक निर्माण को दर्शाता है।

मध्यपाषाण संस्कृतियों की विशेषताएँ

- मध्यपाषाण कालीन लोग गुफाओं और खुले स्थानों पर **अर्ध-स्थायी और अस्थायी शिविरों** में रहते थे।
- वे अपने मृतकों को दफनाते थे, जो सामाजिक मान्यताओं का संकेत देता है। उनके सूक्ष्मपाषाण औज़ारों ने उन्हें छोटे जानवरों और पक्षियों का प्रभावी ढंग से शिकार करने में मदद की।

लघुपाषाण (माइक्रोलिथ)

- माइक्रोलिथ छोटे औज़ार **(1 से 5 सेमी तक)** होते हैं जो **क्वार्टजाइट, चर्ट, कैल्सेडनी, जैस्पर और एगेट (गोमद)** जैसे सिलिका युक्त पत्थरों के **छोटे समानांतर किनारों वाले फलक** पर बनाए जाते हैं।
- इनमें लघु **तक्षिणी, भाला और खुरचनी** शामिल हैं जो उच्च पुरापाषाण कालीन औज़ार परंपराओं से प्राप्त हुए हैं।

प्रारंभिक नवपाषाण संस्कृतियाँ और कृषि का आरंभ

- **'नियोलिथिक'** शब्द का प्रयोग **सर जॉन लुबॉक (1865)** ने अपनी पुस्तक **'प्रागैतिहासिक काल'** में किया था।
- तात्पर्य- **नवपाषाण युग** → खुरदुरे पुरापाषाण औजारों के विपरीत, पॉलिश किए हुए पत्थर के औजार (सेल्ट)।
- **प्रमुख विशेषताएँ**
    - **कृषि, पशुपालन, मिट्टी के बर्तन, स्थायी घर, खाद्य अधिशेष** की शुरुआत।
    - **स्थायी जीवन, जनसंख्या वृद्धि, शिल्प विशेषज्ञता और प्रारंभिक सभ्यताओं** का उदय।
- **वैश्विक उद्भव: 10,000-5000 ईसा पूर्व मिस्र, मेसोपोटामिया, सिंधु क्षेत्र, गंगा घाटी, चीन** में **अत्यधिक असमान वैश्विक प्रसार के साथ उभरा।**
- **नवपाषाण क्रांति (वी. गॉर्डन चाइल्ड)**
    - **भोजन संग्रहण → खाद्य उत्पादन** की ओर बदलाव; अधिशेष के कारण **मृदभांड, स्थायी गांव, पशुधन संरक्षण, विशेषज्ञता** का विकास हुआ, जिससे **शहरी संस्कृतियों और प्रारंभिक कांस्य युगीन राज्यों की नींव** पड़ी।
- **नवपाषाण और समकालीन संस्कृतियाँ**
    - असमान विकास: **दक्षिण-पश्चिम एशिया, मिस्र, यूरोप, मेसोअमेरिका, उत्तर-पश्चिम भारत, गंगा घाटी, चीन** में प्रारंभिक विकास; बाद में **कश्मीर, दक्षिण और पूर्वी भारत में।**
    - **तमिलनाडु और केरल: मध्यपाषाण काल → लौह युग** में सीधा प्रवेश।
    - भारत में **हड़प्पा, ताम्रपाषाण काल** और **लघुपाषाण का उपयोग करने वाले शिकारी-संग्राहकों के साथ** नवपाषाण काल सह-अस्तित्व में था। नवपाषाण काल बनाम ताम्रपाषाण काल: उत्तरार्द्ध में मुख्य रूप से **तांबे का उपयोग** किया गया था।

UnderStand UPSC

- **भारत की नवपाषाण संस्कृतियाँ**
    - **पाषाण युग** का अंतिम चरण, अत्यधिक **क्षेत्रीय और समय-परिवर्तनशील; पूर्वोत्तर भारत** में नवपाषाण काल के औज़ार तो मौजूद हैं लेकिन **खेती नहीं** होती थी जबकि **कश्मीर** में नवपाषाण काल, **मध्यपाषाण काल से** विकसित नहीं हुआ था।
    - प्रमुख फ़सलों में **गेहूँ-जौ** (मेहरगढ़), **चावल** (प्रयागराज), और **राख के टीलों वाला बाजरा** (दक्षिण भारत) शामिल हैं।
    - सामान्य प्रवृत्ति: **गतिहीन/अर्ध-गतिहीन खेती**-पशुपालक गाँव।

नवपाषाण काल – उत्तर-पश्चिमी भारत

- दक्षिण एशिया में पौधों और पशुपालन के प्राचीनतम प्रमाण।
- जंगली गेहूँ, जिसमें **एजिलॉप्स तौशी** भी शामिल है → खेती की एक **स्वतंत्र उत्पत्ति** का संकेत देता है।
- उत्तरी अफ़गानिस्तान की गुफाएँ: मध्यपाषाण काल के समूह **जंगली भेड़, मवेशी और बकरियों** का उपयोग करते थे।
- **प्रमुख स्थल: मेहरगढ़, किली गुल मुहम्मद, राणा घुंडई, अंजीरा; परवर्ती नवपाषाण/ताम्रपाषाण काल के स्थलों में रहमान ढेरी, सराय खोल शामिल हैं।**

नवपाषाण काल – उत्तरी क्षेत्र (कश्मीर)

- **चौथी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत** में शुरू हुआ; **हड़प्पा सभ्यता के समकालीन**। प्रमुख स्थल: **बुर्जहोम, गुफकराल, कनीसपुर**। दो चरण: **असिरेमिक** (मृदभांड रहित) और **सिरेमिक** (मृदभांड + मिट्टी के घर)।
- **भौतिक संस्कृति और अर्थव्यवस्था**
    - बीजों में **गेहूं, जौ, आम मटर, मसूर** शामिल थे; पालतू पशुओं में **मवेशी, भेड़, बकरी, सुअर, कुत्ते, मुर्गी** थे; और शिकार की जाने वाली प्रजातियों में **लाल हिरण, कश्मीरी बारहसिंगा, आइबेक्स, भालू, भेड़िया** शामिल थे।
- **शवाधान और कला**
    - **कुत्तों की अंत्येष्टि, सींगों से बनी अंत्येष्टि वस्तुएँ** और **लाल गेरू** का प्रयोग अंत्येष्टि में देखने को मिलता है; एक पत्थर पर उत्कीर्णित चित्र में **एक कुत्ते और सूर्य के साथ शिकार का दृश्य** दर्शाया गया है।
    - नवपाषाण कश्मीर में **हड्डियों और सींगों से बने औजारों** और **हार्वेस्टर** का प्रयोग भी देखने को मिलता है।
- **मसूर की खेती मध्य एशियाई संपर्कों** का संकेत देती है और कलाकृतियाँ **हड़प्पा सभ्यता** के साथ संपर्क दर्शाती हैं।
- **विशिष्ट विशेषताएँ: गर्तावास,** मिट्टी के घर (बाद में), हड्डी/सींग के औज़ार, लाल गेरू के शवगृह, मेनहिर (महापाषाण), लाल मिट्टी के बर्तन।

बुर्जहोम [CSE 2021]

- बुर्जहोम, श्रीनगर से 16 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में, झेलम नदी के बाढ़ के मैदान के ऊपर करेवा मिट्टी के एक चबूतरे पर स्थित है।
- नवपाषाण काल के लोग **4 मीटर गहरे गर्तावास** में रहते थे जिनमें **अंडाकार आधार, सीढ़ियाँ** और अत्यधिक ठंड से बचने के लिए **फूस की छतों वाले खंभे** होते थे।
- उनकी गतिविधियों में **शिकार करना, मछली पकड़ना, सीमित खेती, अनाज भंडारण** और एक सुसज्जित **हार्वेस्टर** शामिल था; वे **भेड़-बकरियाँ पालते** थे और पौधों की खेती करते थे।
- वे **हड़प्पा सभ्यता के साथ व्यापार** करते थे और कपड़ों में खाल सिलने के लिए **पत्थर की कुल्हाड़ियाँ, छेनी, कुल्हाड़ी, कुदाल, गदा, नोक, कुदाल और सुआ** जैसे उपकरण का इस्तेमाल करते थे।

गुफकराल

- गुफकराल में **तीन सांस्कृतिक चरण** हैं जिनकी शुरुआत लगभग **3000 ईसा पूर्व** से होती है और जहाँ **गर्तावास** के प्रमाण मिले हैं। **भेड़, बकरी, हिरण, आइबेक्स (साकिन), भेड़िये और भालू** की हड्डियाँ पशुपालन और शिकार पर निर्भरता दर्शाती हैं।
- **पॉलिश किए हुए पत्थर के उपकरण, चक्की, सींग के औजार** और **सेलखड़ी के मनके** भौतिक संस्कृति को दर्शाते हैं और यह स्थल लगभग **1300 ईसा पूर्व** तक मौजूद रहा।
- कश्मीर के नवपाषाण काल का पूर्वी एशियाई **यांगशाओ** संस्कृति से संबंध था जो चीन, जापान और कोरिया जैसे पाषाण के चाकू-हार्वेस्टर में देखा जा सकता है।
- विशिष्ट विशेषताओं में **गर्तावास, हार्वेस्टर, सींग की हड्डी के औजार, कुत्तों के दफ़नाने** और शवों पर **लाल गेरू** का उपयोग शामिल हैं।

कच्छ के मैदानों में स्थित मेहरगढ़	गेहूं और जौ कृषि, मवेशी, भेड़, बकरी पशुपालन के सबसे शुरुआती प्रमाण; दुनिया में अपनी तरह के पहले संयुक्त प्रमाण।
क्वेटा घाटी में किली गुल मोहम्मद	टोकरी के निशान वाले मिट्टी के बर्तन और लाल रंग पर काले रंग के बर्तन
बुर्जहोम [कश्मीर] [CSE 2021]	लोग गड्ढे वाले घरों (लगभग 4 मीटर गहरे भूमिगत आवास) में रहते थे।
गुफक्राल [कश्मीर]	छिद्रित पत्थर के चाकूनुमा औजार।

UnderStand UPSC

बेलन नदी घाटी [विंध्यन पर्वतमाला और कैमूर पहाड़ियों का उत्तरी किनारा]	गंगा घाटी में स्थित चोपानी मांडो, कोलदिह्वा, लेहुरादेव और महागारा स्थल इस क्षेत्र के प्रमुख स्थल हैं। इन स्थलों से मिट्टी और लकड़ी से बने घरों के प्रमाण मिले हैं। **महागारा स्थल पर घरेलू चावल के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।**
बुदिहाल (हुंसगी घाटी) कर्नाटक में स्थित है।	बच्चों के शवगाह, पशुओं के वध, घरों और मानव दफन के साक्ष्य मिले हैं। जल संचयन के साक्ष्य भी पहचाने गए हैं।

क्षेत्र और स्थल	प्रमुख विशेषताएँ
विंध्य पहाड़ियाँ और बेलन घाटी- चोपानी-मांडो, कोल्डिहवा, लहुरादेव, महागरा	प्राचीनतम नवपाषाण काल; **बांस-पुताई वाले घर, सूक्ष्म पाषाण, चक्की, मूसल, हस्तनिर्मित और रस्सीदार मृदभांड;** फसलें: **चावल (लगभग 6500 ईसा पूर्व), जौ, गेहूं, दालें;** पशु: **मवेशी, भेड़, बकरी, हिरण, कछुए, मछली**
मध्य-पूर्वी गंगा घाटी- चिरांद, चेचर, सेनुवार, तारादीप	**गोलाकार/अर्धगोलाकार झोपड़ियाँ, मिट्टी के फर्श;** उपकरण: **माइक्रोलिथ, पत्थर की कुल्हाड़ियाँ, हड्डी के उपकरण; टेराकोटा मूर्तियाँ;** फसलें: **चावल, गेहूँ, जौ, बाजरा, दालें; ताम्रपाषाण काल** में परिवर्तन; ताँबा ~तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत में
मध्य-पूर्वी क्षेत्र- बीरभानपुर, कुचाई, गोलबैसासन, शंकरजंग, पांडु राजार ढिबी	उपकरण: **कंधे वाली कुल्हाड़ी, सेल्ट, छेनी; पूर्व/दक्षिण-पूर्व एशिया** के साथ संबंध; पांडु राजार ढिबी **मध्यपाषाण से नवपाषाण काल** को दर्शाता है।
उत्तर-पूर्वी भारत- मरकडोला, दाओजली हेडिंग, सरुतारू	उत्तर नवपाषाण काल; औजार: **कंधे वाले सेल्ट, जमीन पर चलने वाली कुल्हाड़ियाँ;** मिट्टी के बर्तन: **रस्सी/चप्पू से मुद्रित;** अर्थव्यवस्था: **झूम खेती, रतालू और अरबी(कचालू);** शवाधान: **पत्थर/लकड़ी के स्मारक; दक्षिण पूर्व एशिया** के साथ सांस्कृतिक संबंध
दक्षिण भारत- कर्नाटक, आंध्र, उत्तर-पश्चिम तमिलनाडु	**राख के टीले, आवास, शवदाह गृह;** कृषि-पशुपालन: **मवेशी, भैंस, भेड़, बकरी, सुअर, कुत्ता, मुर्गी;** फसलें: **बाजरा, दालें, फलियां;** उपकरण: **पॉलिश किए हुए पत्थर की कुल्हाड़ियां, ब्लेड, चॉपर, खुरचनी;** बाद में **तांबे और कांस्य के;** बुदिहाल: राख के टीले, बच्चों के शवदाह गृह, जल संचयन। ये स्थल गोदावरी, कृष्णा, पेन्नारु, तुंगभद्रा और कावेरी नदी घाटियों में देखे गए हैं। कर्नाटक में संगनकल्लू, तेक्कलकोटा, ब्रह्मगिरि, मास्की, पिकलीहल, वाटकल, हेममिगे और हल्लूर, आंध्र प्रदेश में नागार्जुनकोंडा, रामपुरम और वीरापुरम और तमिलनाडु में पैय्यामपल्ली दक्षिण भारत के प्रमुख नवपाषाण स्थल हैं।

मुख्य बिंदु

- कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में कुपगल, पिकलीहाल और मस्की जैसे कई स्थलों पर ग्रेनाइट चट्टानों पर बने चित्र देखे जा सकते हैं।
- कुपगल (बेल्लारी जिला, कर्नाटक) में ग्रेनाइट पहाड़ियों का एक उभार है, जिसे स्थानीय रूप से हीरेगुड्डा (शाब्दिक अर्थ, 'बड़ी पहाड़ी') के नाम से जाना जाता है।
- कार्ब्यूराइजेशन: लोहे को कार्बन के साथ गर्म करके इस्पात बनाना
- कुल्हाड़ी: घिसी और पॉलिश की हुई हाथ की कुल्हाड़ियाँ; नवपाषाण काल के विशिष्ट औजार

राख के टीले

- राख के टीले वाली जगहें, गाय के गोबर के ढेरों को बार-बार जलाने से बनी राख और कांच जैसे पदार्थ के बड़े-बड़े भंडार होते हैं।
- **कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु** में पाए जाते हैं; **100 से अधिक स्थल** (जैसे, बेल्लारी, रायचूर, बीजापुर, गुलबर्गा, बेलगाम, कुरनूल, महबूबनगर, अनंतपुर)
- **अर्ध-शुष्क, पहाड़ी भूभाग** पर **पशुपालक बस्तियाँ; जानबूझकर गोबर जलाकर मवेशियों को बाँधना** → **प्रजनन क्षमता** से जुड़ा हुआ था। **पशुपालन, पंथ और व्यापार केंद्रों** के रूप में कार्य किया।
- पूर्व में गलत व्याख्या की गई (पौराणिक कथाएँ, भूविज्ञान, सामूहिक सती, औद्योगिक उपयोग); बाद में **नवपाषाण काल** की पुष्टि हुई।

UnderStand UPSC

कालरेखा 1
आरंभिक भारतीय पुरातत्व के प्रमुख कालखंड

20 लाख वर्ष (वर्तमान से पूर्व)	निम्न पुरापाषाण
80,000	मध्य पुरापाषाण
35,000	उच्च पुरापाषाण
12,000	मध्य पाषाण
10,000	नवपाषाण (आरंभिक कृषक तथा पशुपालक)
6,000	ताम्रपाषाण (ताँबे का पहली बार प्रयोग)
2600 ई. पू.	हड़प्पा सभ्यता
1000 ई. पू.	आरंभिक लौहकाल, महापाषाण शवाधान
600 ई. पू.–400 ई. पू.	आरंभिक ऐतिहासिक काल

सभी तिथियाँ अनुमानित हैं। इसके अतिरिक्त उपमहाद्वीप के अलग-अलग भागों में हुए विकास की प्रक्रिया में व्यापक विविधताएँ हैं। यहाँ दी गई तिथियाँ हर चरण के प्राचीनतम साक्ष्य को इंगित करती हैं।

UnderStand UPSC

ताम्रपाषाण चरण

- **नवपाषाण काल** के अंत में **धातुओं** का प्रयोग शुरू हुआ। सबसे पहले इस्तेमाल की जाने वाली धातु **ताँबा** थी और कई संस्कृतियाँ **पत्थर और ताँबे के औज़ारों** पर निर्भर थीं। ऐसी संस्कृति को **ताम्रपाषाण काल** कहा जाता है।
- पूर्व-हड़प्पाई संस्कृतियाँ भारत की सबसे प्रारंभिक ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ हैं।

भौगोलिक विस्तार:
- दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र और पूर्वी भारत में पाया जाता है।
- **राजस्थान:** आहर और गिलुंड (शुष्क बनास घाटी)।
- **पश्चिमी मध्य प्रदेश:** कायथा और एरण (मालवा क्षेत्र)।
- **पश्चिमी महाराष्ट्र:** प्रमुख स्थलों में जोरवे, नेवासा, दैमाबाद (अहमदनगर), चंदोली, सोनगाँव, इनामगाँव (पुणे), नासिक शामिल हैं।
- महाराष्ट्र के अधिकांश स्थल अर्ध-शुष्क, नदी तटीय क्षेत्रों में हैं जहाँ **भूरी-काली मिट्टी** और **बेर-बबूल की वनस्पति** पाई जाती है।
- अन्य स्थल: **नवदाटोली** (नर्मदा पर), प्रयागराज के निकट स्थल (विंध्य से निकटता के कारण), **चिरांद** (गंगा), **पांडु राजार ढीबी** (पश्चिम बंगाल), **महिषदल** (पश्चिम बंगाल)।
- **आंध्र प्रदेश** में कुछ नवपाषाण स्थलों में **ताम्रपाषाण तत्व** दिखाई देते हैं लेकिन ताँबे की वस्तुओं का अभाव है।

ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ

उपकरण	उनके उपकरणों में **लघुपाषाण और ताँबे के औज़ार** शामिल थे जो **ताँबा प्रगलन** के ज्ञान को दर्शाते हैं। शुष्क बनास घाटी के **आहर और गिलुंड** में ताँबे के औज़ार प्रचुर मात्रा में थे। **पत्थर के औज़ार** छोटे होते थे, जिनमें धारें उभरी होती थीं और कुल्हाड़ियाँ अभी भी इस्तेमाल होती थीं जो पहाड़ियों और नदियों के पास फल-फूल रही थीं, हालाँकि **आहर** में अनुपस्थित थीं; **गिलुंड** में पत्थर-ब्लेड उद्योग फल-फूल रहा था। **चपटी आयताकार ताँबे की कुल्हाड़ियाँ जोरवे और चंदोली** में पाई गईं और **ताँबे की छेनी** भी चंदोली में मिली।
मृदभांड	**काले और लाल रंग के बर्तन** आम थे, चाक से बने, कभी-कभी **सफेद रेखीय डिज़ाइनों** से रंगे हुए भी पाए जाते थे और सामान्यतः **राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार और पश्चिम बंगाल** में पाए जाते थे। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में टोंटीदार/नालीदार भांड, बर्तनों का स्टैन्ड जैसी **क्षेत्रीय मृदभांडों की विविधताएँ** समान मृदभांडों के बावजूद विविध **सांस्कृतिक विशेषताओं** का संकेत देती हैं।
पशुपालन और कृषि	ताम्रपाषाण काल के लोग **मवेशी, भेड़, बकरी, सूअर पालते** थे और संभवतः **घोड़ों** का भी इस्तेमाल करते थे। वे **गेहूँ, चावल, बाजरा, मसूर, दलहन** की खेती करते थे, **नवदाटोली में बेर और अलसी** की पैदावार होती थी और **दक्कन में कपास और बाजरा** की पैदावार होती थी। बस्तियों में **कछुए और मुर्गियाँ** पाई जाती हैं और **पूर्वी भारत में मछली के काँटों से मछली-चावल के आहार** का संकेत मिलता है जो एक **देहाती और कृषि जीवन शैली** को दर्शाता है।
आवास	**पकी हुई ईंटें** दुर्लभ थीं; आवास मुख्यतः **घास और मिट्टी की ईंटों** से बने होते थे। **इनामगाँव (पश्चिमी महाराष्ट्र)** में, शुरुआती **आवासों में भट्टियाँ और गोलाकार गड्ढे वाले आवास** होते थे जबकि बाद के **पाँच कमरों वाले आवास बड़े परिवारों** का संकेत देते हैं।
कला और शिल्प	यहाँ के लोग **कुशल ताम्रकार** और **कुशल पत्थर कारीगर** थे, जो अनगिनत **लघु पाषाण शिल्प** बनाते थे। मालवा से प्राप्त **तकली के धागे** और महाराष्ट्र से प्राप्त **कपास, सन और रेशम के धागे** उन्नत कताई और बुनाई कौशल का संकेत देते हैं।
क्षेत्रीय विविधता	अनाज, संरचनाओं और मृदभांडों में **क्षेत्रीय विविधताएँ** थीं: **पूर्वी भारत** में **चावल** की खेती पर बल था जबकि **पश्चिमी भारत** में **जौ और गेहूँ** की खेती होती थी।
शवाधान प्रथाएं	**महाराष्ट्र** में, मृतकों को **घर की फर्श के नीचे (उत्तर-दक्षिण) कलशों** में दफनाया जाता था, जबकि हड़प्पावासी पृथक शवगाहों का इस्तेमाल करते थे। कब्र में रखे बर्तन और तांबे की वस्तुएं मृत्यु के बाद **जीवन में विश्वास का संकेत** देती हैं। **महाराष्ट्र** - उत्तर-दक्षिण में विस्तारित शवाधान; **दक्षिण भारत** - पूर्व-पश्चिम दिशा; **पश्चिम बंगाल** - आंशिक या निष्कर्षण के बाद के शवाधान, जो विभिन्न **अनुष्ठानिक मान्यताओं** को दर्शाते हैं।
धार्मिक पंथ	**महिलाओं की टेराकोटा मूर्तियाँ मातृदेवी की पूजा** का संकेत देती हैं जबकि **कच्ची नग्न मिट्टी की मूर्तियाँ** संभवतः **अनुष्ठानिक कार्यों** से संबंधित हैं। **इनामगाँव** में एक **मातृदेवी की मूर्ति** पश्चिमी एशिया से मिलती-जुलती है और **मालवा और राजस्थान** में **बैल के आकार** की मूर्तियाँ **बैल(वृषभ) पूजा** का संकेत देती हैं।

UnderStand UPSC

सामाजिक असमानता	**शवगाहों में मिली वस्तुएं** **सामाजिक भिन्नता** को दर्शाती हैं: **चंदोली और नेवासा** में, बच्चों के पास या तो **तांबे के मोतियों के हार** थे या सिर्फ़ **बर्तन** थे; **इनामगाँव** में, वयस्कों को **मृदभांड और तांबे की वस्तुओं** के साथ दफनाया गया था। **कायथा** में, एक घर में **29 तांबे की चूड़ियाँ, दो अनोखी कुल्हाड़ियाँ** और **अर्ध-कीमती पत्थरों** (स्टीटाइट, कार्नेलियन) **के हार** थे, जो **धन और प्रतिष्ठा** को दर्शाते हैं।

ताम्रपाषाण काल का महत्व

- **ताम्रपाषाण काल** पूरे **भारत** में फैला (**जलोढ़ मैदानों और घने जंगलों** को **छोड़कर**) जहाँ लोग **नदियों और पहाड़ियों के पास ग्रामीण बस्तियों** में रहते थे।
- **काले और लाल रंग के चाक से बने मृदभांड** और **रंगे हुए मृदभांड** **खाना पकाने, खाने और भंडारण** के लिए आम थे जहाँ **लोटे** का इस्तेमाल होता था, लेकिन **थाली** का नहीं। **दक्षिण भारत** में, **नवपाषाण काल धीरे-धीरे** ताम्रपाषाण काल **(नवपाषाण-ताम्रपाषाण संस्कृतियाँ)** में परिवर्तित हो गया।
- कालक्रमानुसार, सबसे प्रारंभिक बस्तियाँ **मालवा और मध्य भारत (कायथा, एरण) में,** बाद में **पश्चिमी महाराष्ट्र** में और सबसे हाल में पश्चिम बंगाल में थीं जो **भारत के पहले ग्राम समुदायों** को चिह्नित करती हैं।
- **कृषि उन्नत** थी: पश्चिमी भारत में **जौ, गेहूँ, मसूर;** दक्षिणी और पूर्वी भारत में **चावल। आहार** मिश्रित था: पश्चिम में **मांस,** पूर्व में **मछली और चावल।**
- **कायथा, एरण, इनामगाँव** जैसी बस्तियों में **किलेबंद संरचनाएँ** थीं, जबकि पूर्वी स्थलों **(चिरांद, पांडु राजार ढिबी)** में सरल **स्तम्भ गर्त और गोल झोपड़ियाँ** थीं।
- **सीमाएँ: ताम्रपाषाण संस्कृतियों** में **उच्च शिशु मृत्यु दर, कमजोर सामाजिक-आर्थिक संरचनाएँ, सीमित ताम्र प्रौद्योगिकी, कांस्य उपकरण, लेखन और नगरीय जीवन** का अभाव था।

ताम्रपाषाण स्थलों की उपसंस्कृतियाँ

आहर संस्कृति (बनास संस्कृति) (उदयपुर)	बनास बेसिन, राजस्थान (राजस्थान का **दक्षिण-पूर्वी** भाग) **चावल** के साक्ष्य, बालाथल में किलेबंदी के साक्ष्य। इस काल में उगाई जाने वाली अन्य फ़सलों में **गेहूँ, जौ और मोटे अनाज (बाजरा और ज्वार)** शामिल थे। जीव अवशेषों से पता चलता है कि यहाँ **गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर, कुत्ते और मुर्गियाँ** पाली जाती थीं। लोग **सांभर, नीलगाय, चीतल, काला हिरण और जंगली सूअर** जैसे जंगली जानवरों का भी शिकार करते थे।
गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति	राजस्थान के **उत्तर-पूर्वी भाग** में स्थित। **बालेश्वर और खेतड़ी** क्षेत्रों के तांबे के अयस्क संसाधनों से जुड़ा हुआ। **साहिबी** नदी के किनारे स्थित जोधपुर। यह स्थल परिपक्व हड़प्पा संस्कृति के लिए तांबे के प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं में से एक रहा होगा। खेतड़ी खदानों के पास गणेशवर में **तांबे की कलाकृतियाँ** मिलीं। [CSE 2021]
कायथा (उज्जैन) चंबल नदी के पास	**कालीसिंध नदी** (चंबल की एक सहायक नदी) और मध्य भारत के अन्य स्थलों **(नर्मदा, तापी, माही घाटियों)** पर स्थित यह स्थल। कायथा की पहचान प्राचीन कपित्थक से की गई है, जो प्रसिद्ध खगोलशास्त्री-ज्योतिषी वराहमिहिर का जन्मस्थान था। **चीनी मिट्टी के बर्तनों** के प्रकारों में शामिल हैं: चॉकलेटी रंग जैसे लेपित भांड, जिन्हें **कायथा भांड** के नाम से जाना जाता है।
मालवा संस्कृति	अधिकांशतः **नर्मदा** और उसकी सहायक नदियों पर स्थित। मालवा क्षेत्र, **मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र** के कुछ हिस्सों तक फैला हुआ था। इस संस्कृति के अन्य उत्खनित स्थल नवदाटोली, नागदा, कायथा, एरण हैं। धार्मिक पूजा: **टेराकोटा मूर्तियाँ,** जैसे कि मालवा और राजस्थान में बैल की शैली में बनी महिला मूर्तियाँ, एक धार्मिक पंथ का प्रतीक थीं।

UnderStand UPSC